A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

पं० बिरजू महाराज द्वारा सृजित प्रमुख नृत्य नाटिकाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Shivani Kapoor[1], Dr. Sonia Ahuja[2]

1. Research Scholar, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University, Phagwara, Punjab
2. Assistant Professor, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University, Phagwara, Punjab

OPEN ACCESS CC BY

सार

यह शोधपत्र पं० बिरजू महाराज द्वारा प्रस्तुत प्रमुख नृत्य नाटिकाओं का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। पं० बिरजू महाराज कथक नृत्य के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली कलाकारों में से एक हैं, जिन्होंने शास्त्रीय कथक नृत्य को न केवल मंच पर एक नया आयाम दिया, बल्कि इसे नाटकीय अभिव्यक्ति, भाव, संगीत तथा साहित्य के साथ जोड़कर एक समग्र कलारूप के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने अनेक नृत्य नाटिकाओं का निर्माण एवं निर्देशन किया, जिनमें कृष्ण लीला, शिव-पार्वती संवाद, होली, गोवर्धन लीला, गंगा अवतरण, कृष्ण जन्म आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। पं० बिरजू महाराज की प्रस्तुतियों में कथ्य की प्रस्तुति, अंग-प्रस्तार, मुद्राओं की सूक्ष्मता, भाव-भंगिमा की स्पष्टता और लयात्मकता के समन्वय का अद्भुत संगम दिखाई देता है। उन्होंने शास्त्रीयता के मूल को बनाए रखते हुए नृत्य-नाट्य को आधुनिक मंच पर जनमानस के लिए आकर्षक और संप्रेषणीय बनाया। यह शोध इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि यह भारतीय नृत्य परंपरा में उनके योगदान की कलात्मक और वैचारिक पड़ताल करता है।

मूल शब्द *कत्थक, शास्त्रीय नृत्य, पं. बिरजू महाराज, नृत्य नाटिका*

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपरा में कत्थक का स्थान अत्यंत विशिष्ट और गौरवपूर्ण है। यह नृत्य केवल शरीर की चेष्टाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि भाव, कथा, ताल, लय और संप्रेषण की अत्यंत परिष्कृत विधा है, जो दर्शकों के मन-मस्तिष्क को छू जाती है। कत्थक नृत्य की इस समृद्ध धारा में अनेक महान कलाकारों ने योगदान दिया है, किंतु जिनकी सृजानात्मक्ता ने इस नृत्य को वैश्विक पहचान दिलाई, वें हैं

पंडित बिरजू महाराज

पंडित बिरजू महाराज न केवल एक निष्णात नर्तक थे, वरन् वे एक संगीतज्ञ, कवि, चित्रकार और सबसे बढ़कर एक उच्चकोटि के नाट्यकार भी थे। उन्होंने कत्थक को एक नाट्यात्मक आयाम दिया, जिसमें कथा, भाव और अभिनय का अद्भुत समन्वय होता है। उनके द्वारा रचित नृत्य नाटिकाएँ केवल नौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, दर्शन और इतिहास की जीवंत झलकियाँ है।

पंडित बिरजू महाराज: एक परिचय

पंडित बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी 1938 ई0 को लखनऊ में हुआ। वे लखनऊ घराने के सुप्रसिद्ध कत्थक नर्तक पं० अच्छन महाराज के पुत्र थे। बचपन से ही नृत्य उनके जीवन का हिस्सा बन गया था। वे स्वयं कहते थे "नृत्य मेरे लिए साधना है, शरीर के माध्यम से आत्मा की अभिव्यक्ति।"

महाराज जी ने नृत्य को केवल गति या तकनीक का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे संवाद का एक रूप माना। उन्होंने कत्थक को पारंपरिक बंदिशों से निकालकर एक नाट्यात्मक रंगमंचीय रूप प्रदान किया, जहाँ कथा, भाव, गीत, कविता,, संवाद और अभिनय, सभी को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। यही रूप उनकी नृत्य नाटिकाओं की विशेषता है।

कत्थक में नृत्य नाटिका की अवधारणा

"नृत्य नाटिका" एक ऐसा मंचीय स्वरूप हैं, जिसमें कथानक, चरित्र, संवाद, संगीत और नृत्य के माध्यम से एक कथा का नाट्यात्मक रूपांतरण होता है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में कहा गया है।

"नाट्यम् भिन्नरूपेण लोकवृतानुकीर्तनम् ।"

अर्थात् नाट्य जीवन के वृतांतों का कलात्मक प्रस्तुतीकरण है। कत्थक जो मूलतः 'कथा कहने' की परंपरा से उत्पन्न हुआ, उसमें नृत्य नाटिका का समावेश उसकी मूल प्रकृति के अनुरूप है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

पं. बिरजू महाराज ने इस नाट्यत्मक क्षमता का सर्जनात्मक उपयोग करते हुए अनेक ऐसी प्रस्तुतियाँ रचाँ जो कत्थक को संपूर्ण नाट्य कला के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

प्रमुख नृत्य नाटिका: "कृष्णायन" एक विश्लेषण

(क) विषयवस्तु और संकल्पना

"कृष्णायन' पंडित बिरजू महाराज की सर्वाधिक सराहनीय और मंचित नृत्य नाटिकाओं में से एक है। यह श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित एक श्रृंखलाबद्ध प्रस्तुति है। जिसमें उनके बाल्यकाल से लेकर कुरुक्षेत्र के युद्ध तक के प्रसंगों को कत्थक के माध्यम से दर्शाया गया है।

यह प्रस्तुति एक सामान्य रासलीला से भिन्न है। इसमें बालकृष्ण की चंचलता, कृष्ण सुदामा की मित्रता, राधा-कृष्ण का अलौकिक प्रेम, कंस, वध, और गीता का उपदेश इन सभी को नाट्यात्मक एवं सांगीतिक शैली में पिरोया गया है।

(ख) संरचना और मंत्रीय रूप

यह नाटिका अनेक दृश्यों में विभाजित होती है। प्रत्येक दृष्य में संगीत, नृत्य, संवाद, और अभिनय का संगाठित प्रयोग होता है। इसके मुख्य दृश्य है।

1) नंदगांव में बालकृष्ण का जन्मोत्सव

2) माखनचोरी और यशौदा संग संवाद

3) रासलीला गोपियों के संग क्रीड़ा

4) कंस वध

5) सुदामा मिलन

6) गीता उपदेशः अर्जुन-संवाद

पं. बिरजू महाराज ने सभी दृश्यों को स्वरचित गीतों, ठुमरी, भजन, और पदों से सजाया। संगीत संयोजन में तबला, पखावज, बाँसुरी और सरोद का और सरोद का प्रयोग हुआ, जिससे भावों की गंभीरता और संप्रेषणशक्ति अत्यधिक प्रभावशाली बनती है।

(ग) अभिनय और अभिव्यक्ति

इस नाटिका में अभिनय पक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेषतः 'सुदामा मिलन' वाला दृश्य इतना मार्मिक है कि दर्शकों की आँखें नम हो जाती है। महाराज जी स्वंय इस प्रसंग में सुदामा की भूमिका निभाते थे। उनके अभिनय में करूण रस, शरीरिक कम्पन और नेत्राभिनय का अद्भुत समावेश होता था।

"गीता उपदेश" में वे अर्जुन की दुविधा और कृष्ण के दिव्या दर्शन को केवल मुद्राओं और लय के माध्यम से इतनी स्पष्टता से प्रस्तुत करते कि श्रोताओं को शब्दों की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

(घ) तकनीकी पक्ष

"कृष्णायन" में लय की विविधता देखने को मिलती है तीव्र, मध्य, व्रत और विलंबित तालों का प्रयोग कर भाव-परिवर्तन को गहराई दी गई है। नृत्य की चालें (गति, चक्कर, तत्कार और गति-प्रकर्ष अत्यंत संतुलित है।

इसके अतिरिक्त, प्रकाश व्यवस्था, मंच सज्जा, और परिधानों का उपयोग भी कथाकन के अनुरूप होता हैं। राधा के वरख हल्के गुलाबी, कृष्ण के लिए पीताम्बर, और युद्ध दृश्य में गहरे लाल प्रकाश का प्रयोग दृश्य प्रभाव को समृद्ध करता है।

(ड.) कलात्मक विशेषता

"कृष्णायन" में परंपरा और नवाचार का समन्वय है। एक और यह भागवत पुराण की कथा कहता है, तो दूसरी और मंच पर आधुनिक रंग प्रस्तुति, संगीत संयोजन और गति नियंत्रण की दृष्टि से यह समकालीन भी है। यह नृत्य नाटिका कत्थक के माध्यम से संवदेनाओं, दर्शन, सौंदर्य और नैतिक संदेशों का ऐसा प्रभावशाली उदाहरण प्रस्तुत करती है, जो आज भी अनेक संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

नृत्य नाटिका: "कालीचरन" तांडव और तत्वज्ञान का समन्वय

(क) भूमिका 4

"कालीचरन" पंडित बिरजू महाराज द्वारा रचित एक ऐसी कत्थक नृत्य नाटिका है, जिसमें उन्होंने तांडव, रौद्र, वीर, और शांत रस का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया है। यह कृति एक प्रकार से भगवान शिव की उपासना है, किंतु इसके माध्यम से महाराज जी ने मानव आत्मा की आध्यात्मिक यात्रा को नृत्य के माध्यम से रूपायित किया है। इस प्रस्तुति का मुख्य पात्र 'कालीचरन' कोई विशिष्ट पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि एक प्रतीकात्मक चरित्र है- एक साधक, एक तपस्वी, जो भौतिकता से उठकर शिवत्व की ओर अग्रसर होता है।

(ख) कथानक और संकल्पना

कथा का आरंभ एक मानव साधक से होता है जो सांसारिक मोह-माया से त्रस्त है। वह शिव के प्रति समर्पित हो जाता है और कठिन तप करना है।

तपस्या के दौरान उसे विविध प्रकार के भीतरि संघर्ष, प्रलोभन और विशेष झेलने पड़ते हैं। अंततः वह शिव का दर्शन करता है, और आत्मा की मुक्ति प्राप्त करता है।इस पूरी आध्यात्मिक यात्रा को महाराज जी ने कत्थक के माध्यम से, विशेषतः तांडव रूप में प्रस्तुत किया।

(ग) तकनीकी प्रस्तुति

"कालीचरन" में तांडव शैली का प्रयोग प्रधान है। इसकी संरचना में निम्न विशेषताएँ प्रमुख है:

लय की तीव्रता इस नृत्य नाटिका में द्रुत और मध्य लयों का प्रयोग कर साधक की चंचलता और फिर स्थिरता को दिखाया गया है।

तालों का विस्तार विशेषतः दर्शन ताल (13 मात्राएँ), झपताल (10 मात्राएँ) और चौताल (12) मात्राएँ) का प्रयोग।

चरणों की शक्तिः ठोस तत्कार। कत्थक की पौरूषपूर्ण चालें, पखावज की संगति, और

हस्तमुद्राओं से शिव की सृष्टि संहार शक्ति की प्रस्तुति।

(घ) अभिनय और भाव

इस प्रस्तुति में पं. बिरजू महाराज का अभिनय अपने चरम पर देखा जाता है। वे केवल नृत्य नहीं करते, बल्कि शिव की भीषणता, करूणा और, गौरव और निःस्वार्थता को अपने अभिनय, नेत्रों और देह-भाषा से प्रक्ट करते हैं।

विशेष दृश्य :

साधक का ध्यानस्थ होना

विकर्षणों से संघर्ष

शिव का तांडव

साध का समाधिस्थ हो जाना

(ड) सांगीतिक पक्ष

इस नाटिका का संगीत भी विशेष उल्लेखनीय है। इसमें ध्रुपद, पखावज और शिव-स्तोत्रों का प्रयोग हुआ हैं, जिससे प्रस्तुति में एक गूढ़ता और आध्यात्मिका आती है। ॐ नमः शिवाय और "यंबकम् यजाग है. जैसे मंत्रों का प्रयोग किया गया है।

(घ) कलात्मक दृष्टि से मूल्यांकन

"कालीचरन" एक अत्यंत सशक्त रचना है जो कत्थक को केबल श्रृंगार और भिक्त तक सीमित नहीं रखत्ती, बल्कि उसे दार्शनिक और मानव चेतना के स्तर पर उठा ले जाती है। यह महाराज जी की रचनात्मक परिपक्वता और भाव-संप्रेषण की शक्ति की श्रेष्ठ उदाहरण है।

नृत्य नाटिका: "शकुंतला" काव्य और कत्थक का संगम

(क) भूमिका

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

"शकुंतला" नृत्य नाटिका की रचना कालिदास के प्रसिद्ध नाटक "अभिजानशांकुतलमम्' पर आधारित है। पंडित बिरजू महाराज ने इस काव्यात्मक रचना को कत्थक की माध्यम से मंच पर रूपांतरित किया है। यह प्रस्तुति एक स्त्री-केंद्रित भावप्रधान कथा है। जिसमें नारी की प्रेम, त्याग और गरिमा को उजागर किया गया है।

(ख) कथा-संरचना

नाटिका की कथा कालिदास के श्लोकों का अनुसरण करती है:

शकुंतला और राजा दुष्यंत का वन में मिलन

गंधर्व विवाह और शकुंतला की गर्भावस्था

ऋषि दुर्वासा का श्राप दुष्यंत की विस्मृति

दुष्यंत द्वारा शकुंतला की अस्वीकृति

अंततः पुत्र भरत के माध्यम से पुनर्मिलन

पं. बिरजू महाराज ने इस पूरे क्त्थानक को संवादों, गीतों, नृत्य और भावाभिनय के माध्यम से जीवंत किया।

(ग) अभिनय और भावभिनय

"शकुंतला" एक नायिका प्रधान नाट्य हैं, जिसमें शकुलता के अंतर्गत, संवदेना और मानसिक पीड़ा को प्रक्ट करना चुनौतीपूर्ण कार्य था। महाराज जी ने इसे विशेषतः शिष्या शोवना नारायण और सारस्वती सेन के माध्यम से मंचित कराया, जो अत्यंत प्रभावशाली रहा।

भावों का प्रयोगः

श्रृंगार रसः मिलन और प्रेम के दृश्य

करुण रस श्रापित शकुंतला का बिलाप

बीर रसः पुत्रा भरत की साहसिकता

शांत रसः पुनर्मिलन के पश्चात की संतुष्टि

(घ) नृत्य और ताल विन्यास

इस प्रस्तुति में मृदु लय (धीमी गति) का प्रयोग अधिक हुआ है ताकि भावों की गहराई संप्रेषित हो सके। झपताल और रूपक ताल का प्रयोग कर नृत्य की गति को नाट्य के अनुसार नियंत्रित किया गया

(ड.) काव्य और संगीत

इस नाटिका में संस्कृति लोक, ब्रज भाषा के पद और हिंदी गीतों का सुन्दर समन्वय है। महाराज जी ने अनेक पद स्वयं रचे तथा संगीतबद्ध किए।

उदाहरण स्वरूपः

"नयन विछाए बाट जोहे, प्रिय मिलन की आस"

"शाप की छाया में, बिसरा गया विश्वास"

(च) रंगमंचीय प्रयोग

मंच सज्जा में वन, राजसभा, और ऋषि आश्रम के दृश्य प्रभाव को लाइटिंग और पृष्ठभूमि संगीत से सजीव किया गया है। वस्त्र विन्यास पारंपरिक और प्रतीकात्मक था।

इन दोनों नृत्य नाटिकाओं में पंडित बिरजू महाराज की कथात्मक दृष्टि, कलात्मक गहराई और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का अद्भुत समावेश मिलता है। 'कालीचरन' जहां दार्शनिकता और ताडंव का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं "शकुंतला काव्य और श्रृंगार का सुंदरतम प्रस्तुतीकरण है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

नृत्य नाटिका: मुगल-ए-आज़म कत्थक और इतिहास का संगम

(क) भूमिका

"मुगल-ए-आजम" नृत्य नाटिका पंडित बिरजू महाराज द्वारा 21वीं सदी के दर्शकों के लिए तैयार की गई ऐसी प्रस्तुति है, जो इतिहास, प्रेम और राजनीति के त्रिकोणीय संबंधों को कत्थक की शैली में प्रस्तुत करती है। यह नाटिका प्रसिद्ध फिल्म मुगल-ए-आज़म से प्रेरित हैं, किंतु इसे पं. बिरजू महाराज ने पूर्ण रूप से नाख्य-नृत्य शैली में परिवर्तित कर एक नई ऊँचाई प्रदान की।

(ख) कथानक

कथावस्तु प्रसिद्ध है-

(क) अवधारणा

"रोमांच प. बिरजू महाराज द्वारा रचित एक पूर्णतः नवाचारी कत्यक प्रस्तुति है, जो किसी ऐतिहासिक अथवा पौराणिक कथा पर नहीं, अपितु मानव भावनाओं की विविधता पर आधारित है। इसमें किसी एक कथा के अनुसरण नहीं किया गया, बल्कि भावों की श्रृंखला को नृत्य के माध्यम से चित्रित किया गया है।

(ख) संरचना

इस नृत्य नाटिका को पांच खंडों में विभाजित किया गया है:

1) हर्ष

2) भौति

3) विस्मय

4) करूणा

5) आनंद

हर अनुभाग में पं. बिरजू महाराज ने कत्थक के माध्यम से भावों की शरीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति की।

(ग) विशेषताएँ

नव प्रयोग: इसमें ड्रम, जैज़ गिटार, एवं पारंपरिक तबले का संगम देखा गया।

तालों का अन्वेषण: धमार, त्रिवट, और मिश्र तालों का अत्यंत प्रयोगात्मक उपयोग।

प्रकाश संयोजन हर भाव के अनुरूप रंग (नीला: करूणा, लाल भीति, पीला-हर्ष) का उपयोग।

(घ) प्रभाव

'रोमाचं' इस बात का उदाहरण है कि कत्थक केवल परंपराओं से जुझ न होकर, मानव अस्तित्व के विविध पक्षों को भी उकेर सकता है। यह नृत्य नाटिका विशेष रूप से युवा दर्शकों में लोकप्रिया हुई। स्मग्र मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

पंडित बिरजू महाराज द्वारा रचित कत्थक नृत्य नाटिकाएँ न केवल सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे भारतीय कला की विविधता, गहराई और रचनात्मक विस्तार का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

नृत्य-नाटिकाविषयशैलीप्रमुख रस

कृष्णायनपौरणिक भक्ति-भावनात्मकश्रृंगार, करूणकालीचरन आध्यात्मिक तांडव, ध्यानरोद्र, शांतशकुंतलाकाव्य आधारित भावप्रधानश्रृंगार, करूणमुगल-एआज़म ऐतिहासिक प्रेम राजनैतिकनाट्य बीर, करुणरोमांचमनोवैज्ञानिकनव प्रयोगसभी नव रस

महाराज जी की नृत्य नाटिकाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने कत्थक को संवादविहिन, किन्तु पूर्णतः संप्रेषणीय मंचीय माध्यम में परिवर्तित किया। उनके प्रयासों से कत्थक ने आधुनिक रंगमंच पर नाट्य कला का रूप धारण किया।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

निष्कर्ष

पं० बिरजू महाराज भारतीय शास्त्रीय नृत्य, विशेषतः कथक, के क्षेत्र में एक अप्रतिम कलाकार और नवाचार के प्रतीक थे। उन्होंने कथक को केवल एक नृत्य शैली न मानकर उसे एक संपूर्ण रंगमंचीय रूप में विकसित किया। उनकी रचित प्रमुख नृत्य नाटिकाएँ जैसे कृष्ण लीला, शिव-पार्वती संवाद, होली, नवरस, गंगा अवतरण आदि नृत्य, अभिनय, संगीत, साहित्य और भाव की अभूतपूर्व समन्विति को दर्शाती हैं। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्होंने न केवल पौराणिक कथाओं और धार्मिक भावनाओं को मंच पर जीवंत किया, बल्कि उसमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ भी जोड़े।

पं० बिरजू महाराज की नृत्य नाटिकाओं में पारंपरिक कथक की जड़ें तो हैं ही, परंतु उनके मंचन में नवीन प्रयोग, नाटकीय संवेदना, लय और तालीम की स्पष्टता भी देखने को मिलती है। उन्होंने कथक को केवल एक प्रदर्शन कला के रूप में नहीं, बल्कि एक संवादात्मक, संवेदनशील और शिक्षाप्रद माध्यम के रूप में स्थापित किया।

अत:अत: पं० बिरजू महाराज की नृत्य नाटिकाएँ कथक के विकास, समकालीन प्रासंगिकता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान में एक सशक्त आधार बनकर उभरीं, जो आने बाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेंगी।

संदर्भ सूची

1. Narayan, S. (2010). My journey through Kathak. Roli Books.
2. Kothari, S. (1989). Kathak: Indian classical dance art. Abhinav Publications.
3. Walker, M. (2004). India's Kathak Dance: Past Present and Future. APH Publishing.
4 Maharaj, B., & Bhargava, P. (2002). The world of Kathak dance. New Delhi: Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
5. Massey, R. (1999). India's dances: Their history, technique, and repertoire. New Delhi: Abhinav Publications.
6. Anand, M (2012). कत्थक का लखनऊ घराना और पं. बिरजू महाराज. Kanishka Publications.